

बेघर लोगों के जीवन की रक्षा कैसे हो?

भारत डोगरा

हर साल कंपकंपाती सर्दी के दिनों में बहुत से बेघर लोगों की मौत हमारी संवेदनाओं को झकझोरती है। दिल्ली और लखनऊ जैसे अधिक सर्दी वाले बड़े शहरों में ही नहीं अपितु अनेक छोटे शहरों में भी यह एक चिंता का विषय है। सामाजिक संगठन व अनेक नागरिक, खासकर युवा इस दर्द को कम करने में सहयोग देना चाहते हैं।

सरकार के स्तर पर भी सक्रियता बढ़ी है। दिल्ली में उप-राज्यपाल से लेकर पीएमओ (प्रधानमंत्री कार्यालय) तक यह संवेदना देखी जा सकती है कि किसी बेघर को सर्द रात में फुटपाथ पर न रहना पड़े, उसे किसी शेल्टर में भेजा जाए। देश भर में सरकारी एजेंसियों की सक्रियता बढ़ाने में अदालती आदेशों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

पर इन तमाम प्रयासों के बावजूद हम यह नहीं कह सकते हैं कि बेघरों के जीवन की रक्षा सर्दी व अन्य प्रतिकूल मौसम में हो सकी है। आज भी देश में बड़ी संख्या में बेघर लोग इस कारण त्रासद मौत मर रहे हैं। अतः इस बारे में पुनर्विचार ज़रूरी है कि सर्द रातों में बेघर लोगों की दर्दनाक मौत रोकने के लिए नीतियों में क्या सुधार ज़रूरी हैं।

मौजूदा प्रयासों की एक बड़ी कमी यह है कि ऐसे अधिकतर प्रयास सर्दी तेज़ होने पर ही शुरू होते हैं। प्रायः देखा गया है कि अधिकांश सक्रियता सर्दी के कुछ सप्ताहों तक ही सीमित रहती है। अन्य समय इस पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। यदि शीत लहर के समय में स्थिति ठीक रखनी है तो ज़रूरी है कि इसकी तैयारी काफी समय पहले शुरू हो जानी चाहिए। देर से शुरू होने के कारण तैयारी आधी-अधूरी रह जाती है।

न जाने क्यों यह मान लिया गया है कि बेघरों की कठिनाइयाँ केवल सर्दी के कुछ सप्ताहों तक सीमित हैं। मानसून के महीनों में जब मूसलाधार वर्षा होती है तब क्या फुटपाथ पर सोया जा सकता है? थोड़ी बूँदाबांदी से ही फुटपाथ सोने लायक नहीं रह जाता है, तो फिर तेज़ वर्षा में

बेघर लोग कहां जाएं?

जहां तक बेघर महिलाओं का सवाल है तो सुरक्षित शेल्टर की ज़रूरत उन्हें पूरे वर्ष है, पर उनके बारे में भी अधिक चिंता सर्दी के दिनों में ही नज़र आती है। कई बार ऐसे अस्थायी शेल्टर बना दिए जाते हैं (जैसे पुरानी बस) जिनमें शौचालय जैसी ज़रूरी सुविधा भी नहीं होती है। इस तरह के अस्थायी शार्टकट तब ज़रूरी हो जाते हैं, जब पहले से संतोषजनक समाधान की तैयारी न की जाए। अतः ज़रूरत इस बात की है कि बेघर लोगों की समस्याओं को सुलझाने के लिए निरंतरता से कार्य किया जाए। यह एजेंडा केवल रैन बसेरे बनाने का नहीं है। रैन बसेरे व शेल्टर की व्यवस्था बेघर लोगों की समस्याएं कम करने का एक महत्वपूर्ण पक्ष तो है पर यह एकमात्र पक्ष नहीं है। पोषण, चिकित्सा व नशामुक्ति पर भी ध्यान देना ज़रूरी है।

बहुत से बेघर लोगों में पोषण की गंभीर कमी है। यह समस्या बच्चों व महिलाओं में और भी अधिक है। इस कारण जो बहुत कमज़ोरी की स्थिति उत्पन्न होती है उसमें सर्दी व अन्य प्रतिकूल मौसम का प्रकोप अधिक जानलेवा सिद्ध होता है। अनेक बेघर लोग बीमारी का इलाज उचित समय पर करवाने में असमर्थ हैं। कोई स्थाई पता या राशन कार्ड न होने के कारण उन्हें न तो सरकारी अस्पताल में इलाज मिलता है न सस्ता राशन मिलता है।

फुटपाथ की ज़िन्दगी में नशे की आदत पड़ने की संभावना, विशेषकर बच्चों और युवाओं में अधिक होती है। उचित समय पर उन्हें नशा-मुक्ति प्रयासों का लाभ मिले तो उनका जीवन बचाया जा सकता है।

इस संदर्भ में एक अच्छी खबर यह है कि जब बेघर लोगों को प्रेरित कर व उन्हें जोड़कर उनकी स्थिति सुधारने के प्रयास किए गए हैं तो इसमें बेहतर सफलता मिली है। ऐसे प्रयासों का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह रहा है कि कई पहले स्वयं बेघर रहे व्यक्तियों ने खुद बेघर लोगों की स्थिति

सुधारने की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी संभाली है। अतः बेघर लोगों के लिए प्रयास निरंतरता से हों तथा उनकी भागीदारी से हों। इनमें आश्रय, पोषण, चिकित्सा, नशा-मुक्ति जैसे

सभी ज़रूरी कार्यों के लिए पर्याप्त बजट व्यवस्था होनी चाहिए। यह कार्य सरकार, सामाजिक कार्यकर्ताओं व बेघर लोगों के आपसी सहयोग से ही आगे बढ़ेगा। (स्रोत फीचर्स)